मनोज
चित्र
कथा
मूल्य 5.00
राम-रहीम और
लापता विमान
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
मनोज
कॉमिक्स

राम-रहीम और लापता विमान

डबल सीक्रेट एजेण्ट 002 राम-रहीम सीरीज

लेखक : बिमल चटर्जी

चित्रांकन : दिलीप कदम, विजय कदम, त्रिशूल कॉमिको आर्ट

ठीक है। मैं मान लेता हूं कि तुम बिल्कुल सीरियस हो और सच कह रहे हो, लेकिन फिर भी तुम वह काम नहीं कर सकते, जो कह रहे हो।
क्या?

हा... हा... हा! क्या मैं झूठ बोल रहा हूं?
य... यानी तुम अब भी मजाक करने से बाज नहीं आओगे..

... राम भइया, मैं सच कह रहा हूं। यदि तुमने असली बात नहीं बताई तो मैं अपना सिर फोड़ लूंगा।
तुम तो खामखाह परेशान हो रहे हो रहीम। मैंने कहा ना कि हम एक जरूरी काम से बम्बई जा रहे हैं।

अच्छा, तब यही बता दो कि वह जरूरी काम चीफ अंकल का है या तुम्हारा पर्सनल।
मेरा पर्सनल!

तुम फिर झूठ बोल रहे हो राम भइया! राजधानी से कलकत्ता रवाना होने से पूर्व तुम चीफ से एकान्त में मिले थे और उनमें व तुममें क्या बात हुई, तुमने मुझे यह भी अभी तक नहीं बताया...

...फिर तुमने मुझे यह भी नहीं बताया कि कलकत्ते के एक बदनाम बॉर मूनलाइट में तुम जिस व्यक्ति से मिले थे, वह कौन था और उससे तुम्हारी क्या बातचीत हुई...

...उसके बाद उसका कत्ल क्यों हुआ और किसने किया? यह भी तुमने नहीं बताया...

...और अब यह अचानक कलकत्ता से बम्बई के लिए प्रस्थान, इस संबंध में भी तुमने मुझे कुछ नहीं बताया...

...सच राम भइया, क्या तुम मुझे मूर्ख समझते हो, जो मैं तुम्हारे यह कहने पर कि तुम घर से अपने किसी पर्सनल काम से निकले हो और उसी के लिए यह सैर कर रहे हो, मैं विश्वास कर लूंगा और चुप हो जाऊंगा।

रहीम की बात सुनकर राम मुस्करा उठा।
नहीं रहीम, बात कभी और की होती तो मैं तुम्हें मूर्ख भी मान लेता, लेकिन अब तुम्हारी बातें सुनने के बाद मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि तुम दिन-प्रतिदिन समझदार होते जा रहे हो...

...और जुबान के साथ-साथ दिमाग से भी काम लेने लगे हो।
तो फिर जल्दी से बता डालो कि असल बात क्या है? और यह भ्रमण किस चक्कर में हो रहा है?
ठीक है, बताता हूं। लेकिन तुम चुपचाप सुनना, बीच में नहीं बोलना। आज से सात दिन पहले...
...जब चीफ अंकल ने हमें अपने ऑफिस में बुलाया था तो उन्होंने तुम्हें अलग कमरे में भेजकर मुझसे सिर्फ इतना ही कहा था...
राम! तुम्हें आज रात ही कलकत्ता के लिए रवाना होना है। वहां तुम्हें एक व्यक्ति से मिलना है, जिसका नाम राधेलाल है...
...वह तुम्हें वहीं के एक बदनाम बॉर मून-लाइट में मिलेगा। कोड होगा काला गुलाब, आगे की बात तुम्हें वही बताएगा।
वह तो ठीक है अंकल, लेकिन असल बात क्या है, और फिर रहीम को आपने इस मामले से बाहर क्यों रखा है?

असल बात तो मुझे भी नहीं मालूम। उसी व्यक्ति राधेलाल ने ही मुझसे कहा था कि रहीम को इस मुलाकात के संबंध में कुछ भी न बताया जाए।
ओह! ऐसा उसने क्यों कहा और कौन है वह?
वह हमारे ही विभाग का एक होनहार एजेण्ट है और हमसे कोई खास रहस्य की बात कहना चाहता है, जो वह शायद टेलीफोन पर नहीं कहना चाहता था...
...और बातों-बातों में मैं सिर्फ इतना ही अंदाजा लगा पाया हूं कि जो कुछ वह बताना चाहता है, उसका कुछ न कुछ संबंध रहीम से है।
क्या?
हां, इसीलिए मैं चाहता हूं कि तुम अकेले ही कलकत्ते जाकर उससे मिलो और उससे सारी जानकारी हासिल करो।
...लेकिन मैंने चीफ को मना लिया और उनसे तुम्हें भी साथ ले जाने की आज्ञा ले ली।
ओह! फिर?

फिर तो तुम जानते ही हो कि हम कलकत्ता पहुंचे और एक होटल में ठहरे...
रहीम! तुम यहीं कमरे में रहोगे, मैं दो घंटे के लिए बाहर जा रहा हूं।
लगता है, तुम मुझे पागल करके ही छोड़ोगे। आखिर तुम मुझे बताते क्यों नहीं कि यहां क्यों आए हो और अब किससे मिलने जा रहे हो?

कोई विशेष बात नहीं है। मैं अपने निजी कार्य से जा रहा हूं। दरअसल मूनलाइट बॉर में मुझे किसी व्यक्ति से मिलना है।
ठीक है। मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।

नहीं, तुम यहीं रहोगे। यह मेरी आज्ञा है।
ओफ्फो! या अल्लाह! तू मुझे उठा ही ले तो अच्छा है।

...तुम्हें होटल में छोड़कर मैं उस बदनाम बॉर मूनलाइट में पहुंचा...

...मैंने उसे पहचानते ही बैठने के लिए कहा, लेकिन...

हिच...हिच... यहां बात करना उचित नहीं होगा मिस्टर राम... आओ, ऊपर कमरे में चलते हैं। वह मेरा ही कमरा है... हिच ...हिच...।

ठीक है, चलो।

हिच... हिच... ऐसे नहीं भाई, तुम यदि मेरे साथ चलोगे तो लोगों को यानी दुश्मनों को शक हो जाएगा। मैं अपने कमरे में जाता हूं, तुम पीछे से आना। रूम नम्बर तेरह! समझ गए न? हिच... हिच।
समझ गया!

पता नहीं कहां-कहां से आ जाते हैं साले सूफी लोग... हिच... हिच...

... साले कहते हैं कि यह शराब पीने वालों के लिए बैठने की जगह नहीं है... हिच... हिच... देखो... देखो साले सूफी को, बैठने को मना करता है।
हिच... हिच... बुरी बात कहता है।

ऊंह! हिच... हिच... जैसे साले के बाप की टेबल है! यहां बैठने नहीं देगा... हिच...

... अभी तो जाता हूं छोकरे! अभी तो मैंने बहुत पी रखी है, लेकिन हिच... हिच ... होश में आने के बाद तुमसे निपट लूंगा! हिच... हिच जाता हूं... हिच...।
वाह! खूब गजब की एक्टिंग करनी जानता है।

... कुछ देर बाद मैं भी उसके कमरे में पहुंच गया...
मिस्टर राधेलाल! मेरे पास समय बहुत कम है। तुम्हें जो कहना है, जल्दी कह डालो।
तो सुनो, मैं तुम लोगों का ध्यान उन विमान घटनाओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूं, जो रहस्यमय ढंग से लापता हो चुके हैं।

क्या ऽऽऽ?

त...तुम उन विमानों के बारे में क्या जानते हो?
बस इतना ही जानता हूं कि अब तक दुनिया के जो तेरह विमान उड़ान भरते-भरते अचानक आकाश से गायब हुए हैं...

...उन्हें अंतिम बार ग्रीनलैंड के ऊपर देखा गया था। बस।
ग्रीनलैंड! यह कौन-सी जगह है?

यह दुनिया से अलग-थलग एक स्वतंत्र देश है। मजेदार बात तो यह है कि दुनिया के नक्शे में इस देश का कोई नाम नहीं है।
ओह! लेकिन यह सब बातें तुम्हें कहां से और कैसे मालूम हुईं?

मेरे एक शिकारी मित्र अजीतपाल से। नशे में बहककर उसने मुझे यह सब बातें बताई थीं। यह आज से पन्द्रह रोज पहले की बात है, और वह अगले ही दिन यहां से अपने घर बम्बई चला गया था।

और उसे यह बातें कैसे मालूम हुई थीं?
मैंने उससे पूछा था, लेकिन उसने मुझे नशे में होने के बावजूद इस संबंध में कुछ नहीं बताया...

...हां, मुझे इतना जरूर मालूम हो गया कि वह दक्षिण अफ्रीका से एक माह पहले ही भारत वापस लौटा था।
और कुछ मालूम है तुम्हें?

नहीं।
इसका मतलब है कि असली बात तुम्हारे मित्र अजीतपाल से ही मालूम हो सकेगी।

हां, लेकिन मुझे विश्वास नहीं कि वह तुम्हें आसानी से सबकुछ बता देगा
क्यों?

दरअसल अगले दिन सुबह नशा उतरने के बाद जब मैंने उससे रात की बात का जिक्र किया था तो वह अत्यंत भयभीत नजर आने लगा था और उसने उसी दिन मुझसे विदा ले ली थी।
हुम्म!

ठीक है। क्या तुम मुझे उसका पता दे सकते हो?
हां, लेकिन तुम उसके पते का क्या करोगे?

मैं उससे मिलकर विमानों के गायब होने की असलियत जानने की कोशिश करूंगा।
और यदि उसने कुछ नहीं बताया तो...?

बताने और न बताने की बात मुझ पर छोड़ दो और सिर्फ उसका पता लिख दो।
ठीक है।

...राधेलाल ने अपने मित्र अजीतपाल का पता लिखकर दे दिया...
अच्छा तो मैं चलता हूं।
ठीक है। लेकिन सावधान रहना। मैंने कुछ दिनों से अपने इर्द-गिर्द खतरे ...।
... अभी वह अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि...

...एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ कमरे का दरवाज़ा खुला...
भड़ाक्

...और इससे पहले कि मैं या राधेलाल कुछ समझ पाते...
धांय
धांय
आह!

...पता नहीं क्या बात थी कि मैं एकदम अपने स्थान से उछल गया था और इसीलिए बच गया था जबकि राधेलाल मारा गया। फिर आक्रमणकारी अपना काम करने के बाद जिस तरह वहां आए थे, उसी तरह वहां से गायब भी हो गये...
राधेलाल... राधेलाल!

ओह! यह तो दम तोड़ चुका है। अब मुझे भी यहां नहीं ठहरना चाहिए। गोलियों की आवाज़ सुनकर लोग-बाग यहां आते ही होंगे...

...यदि उन्होंने मुझे ऐसी स्थिति में देख लिया तो मैं नाहक ही परेशानी में फंस जाऊंगा।

हुम्म! तो यह था तुम्हारा पर्सनल काम और असलियत।

हां, अब तुमसे कुछ भी छिपाना बेकार समझ मैंने तुम्हें सारी बात बता दी है।
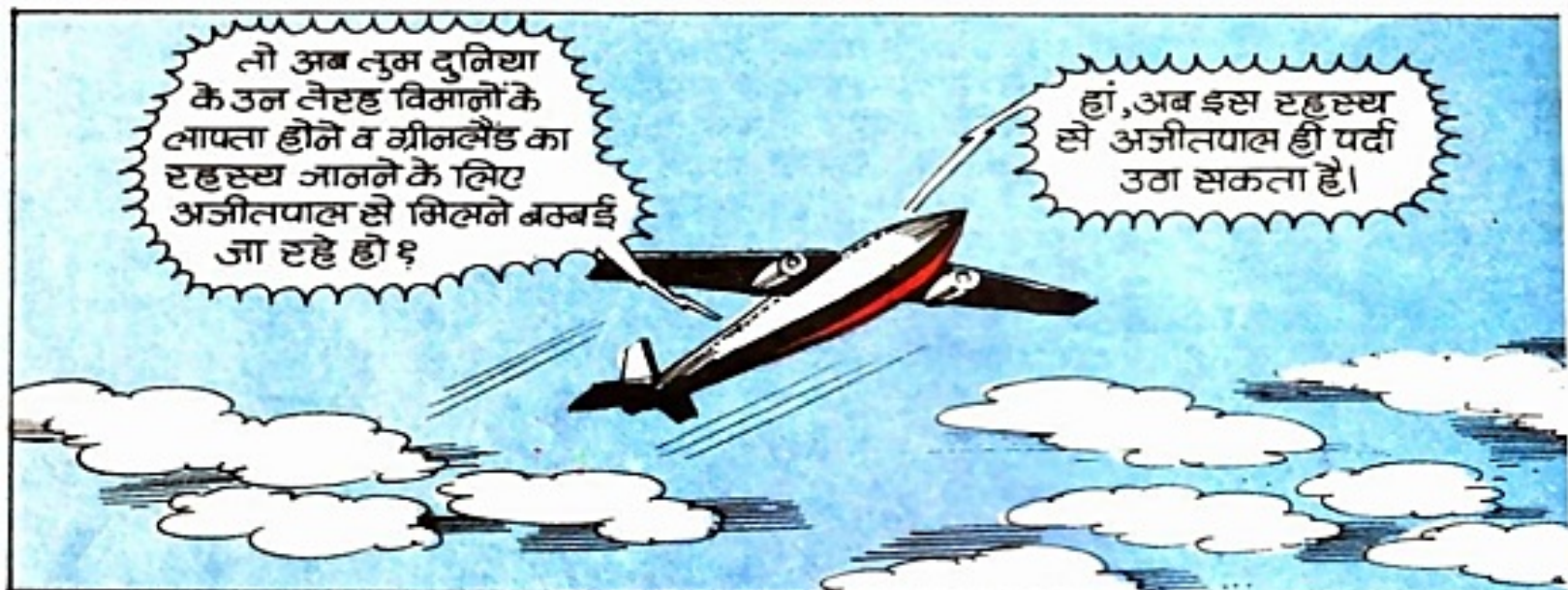
तो अब तुम दुनिया के उन तेरह विमानों के लापता होने व ग्रीनलैंड का रहस्य जानने के लिए अजीतपाल से मिलने बम्बई जा रहे हो ?
हां, अब इस रहस्य से अजीतपाल ही पर्दा उठा सकता है।
क्या तुमने उन कातिलों के बारे में कुछ सोचा कि वे कौन थे और उन्होंने राधेलाल की हत्या क्यों की ?
राधेलाल के हत्यारे कौन हो सकते हैं, इस पर भी अजीतपाल से मिलने पर ही प्रकाश पड़ सकता है...
...वैसे मुझे संदेह है कि उन हत्यारों पर राधेलाल की असलियत खुल चुकी थी और हो सकता है कि हत्यारों का कोई संबंध गायब होने वाले विमानों से भी हो।
हां, यह हो सकता है। लेकिन राम भइया, एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि राधे ने चीफ से मुझे साथ न लाने के लिए क्यों कहा था ?

ओह! यह बात तो मैं स्वयं राधेलाल से पूछना भूल गया।
हुम्म!

लेकिन कोई बात नहीं। हो सकता है, इस संबंध में अजीतपाल ही हमें कुछ बता दे।
और यदि हमारे अजीतपाल तक पहुंचने से पहले ही राधेलाल के हत्यारों ने उसे भी ठिकाने लगा दिया तो...?

ओ नो...ऐसा नहीं हो सकता।

और राम भइया, मुझे न जाने क्यों ऐसा लग रहा है कि ऐसा हो जाएगा।
ईश्वर करे ऐसा न हो। वरना तमाम रहस्यों पर पर्दा पड़ा रह जाएगा।

तभी—
अटेंशन प्लीज, अटेंशन प्लीज। विमान बम्बई के एयरोड्राम पर पहुंचने ही वाला है। आप लोगों से आग्रह है कि आप लोग अपनी सुरक्षा बेल्ट बांध लें।
चलो, बातों ही बातों में यह दो घंटे का सफर बड़ी आसानी से कट गया।

टैक्सी दौड़ पड़ी।

आप इस शहर में पहली बार आए हैं साहब?

आ तो हम सैकड़ों बार चुके हैं, लेकिन होटल में पहली बार रहेंगे...

और मैं पहले कॉफी पिऊंगा।

तो ठीक है। तुम कॉफी का ऑर्डर दो, तब तक मैं झटपट नहा लूं।

ठीक है।

...अभी तक लापता विमानों का कोई पता नहीं चला?

ऊंह! और शायद उन्हें पता भी नहीं चलेगा।

पहले समाचारपत्र को मेज पर रखकर...

...रहीम ने दूसरा समाचारपत्र उठाया—

दैनिक प्रभात

पांच देशों के तेरह विमान लापता। उनके साथ ही सात सौ अस्सी विमान यात्रियों का भी अभी तक कोई सुराग नहीं मिला।

लो राम भइया, आज के भी तमाम समाचारपत्र उन तेरह लापता विमानों की खबरों से भरे पड़े हैं।

यह तो होना ही है। तुम इस मामले को जितना साधारण समझ रहे हो, यह उतना साधारण नहीं है।

कालबेल की आवाज़ सुनकर रहीम बोलता-बोलता चुप हो गया।

कौन ?
साहब! मैं वेटर, कॉफी लाया हूं!

ठीक है, आ जाओ!

वेटर भीतर प्रविष्ट हो टेबल पर कॉफी रखकर...

...वापस लौट गया।
मेरे लिए भी एक कप बना दो। मीठा ज़रा कम ही रखना।
हूं!

राम भइया, तुम्हारा क्या विचार है, ये विमान किसी प्राकृतिक प्रकोप का शिकार हुए हैं या किसी व्यक्ति या दल ने उनका अपहरण किया है?
अभी मैं विश्वास के साथ कुछ भी नहीं कह सकता। हां, राधेलाल की बात सुनकर मुझे यह संदेह जरूर हो गया है कि इनके अपहरण के पीछे किसी गैंग का हाथ है।

फिर कॉफी पीने के बाद रहीम बाथरूम में घुस गया और राम कपड़े पहनने लगा।

लगभग आधा घंटे बाद उनकी टैक्सी लिंक रोड जा रही थी, जहां अजीतपाल का फ्लैट था।
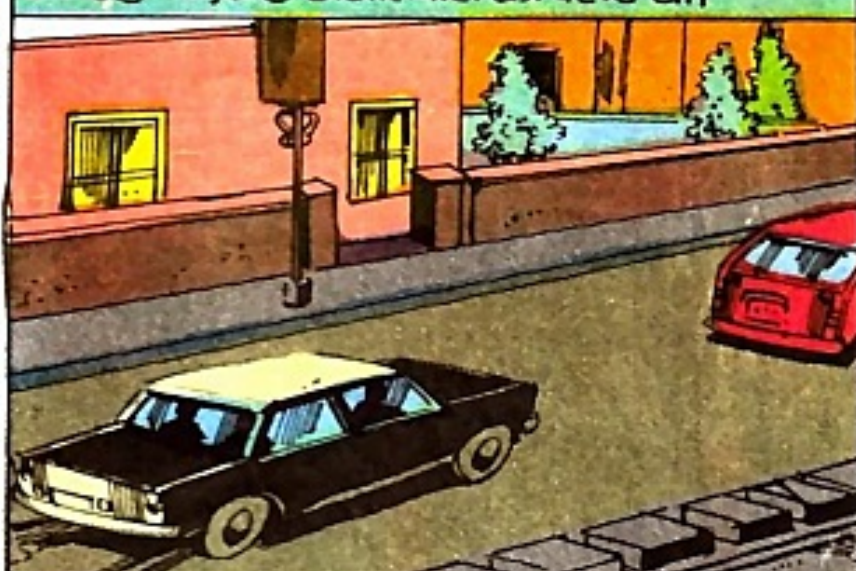
परन्तु उस इमारत के निकट पहुंचते ही, जिसमें अजीतपाल का फ्लैट था, उन दोनों के दिल धक से रह गए।

यह भीड़ कैसी है भइया?

क्या कह सकता हूं, परन्तु यहां कोई घटना जरूर घटी है, वरना पुलिस यहां मौजूद न होती।

क्यों भाई साहब, क्या हुआ यहां?
एक आदमी का मर्डर हो गया है।

राम-रहीम का दिल और तेज़ी से धड़कने लगा।
क्या नाम है उस व्यक्ति का और उसका मर्डर किसने किया?
उस व्यक्ति का नाम अजीतपाल है। पेशे से शिकारी था। लेकिन कातिलों की शक्ल कोई नहीं देख पाया। सबके चेहरे नकाब से ढके हुए थे।

ओह! यह कब की बात है? यानी मर्डर कब हुआ?
यही कोई दो-ढाई घंटे पहले।

कुछ और पूछना है जनाब?
जी नहीं, धन्यवाद।

तब रहीम का हाथ पकड़कर राम एक तरफ चल पड़ा, जहां लोग-बाग नहीं थे।
ऊंह! पूछताछ तो ऐसे कर रहा था छोकरा, जैसे पुलिस का बाप वही है और कातिल को चुटकी बजाते ही पकड़ लेगा।

आखिर वही हुआ राम भइया, जिसका डर था। आखिर राधेलाल के कातिल अजीतपाल को भी खत्म कर गए।
मुझे यह विश्वास तो नहीं है कि वे कातिल वही रहे होंगे, जिन्होंने राधेलाल का कत्ल किया है...

...हां, दोनों पार्टी एक ही गैंग से जरूर संबंधित होंगी।
और राम भइया, अब दो बातें मैं भी दावे के साथ कह सकता हूं...

...एक तो यह कि विमानों के गायब होने के पीछे वास्तव में किसी गैंग या देश का हाथ है। दूसरे यह कि उस गैंग या उसके एजेंटों की नजर बराबर हम पर भी टिकी हुई है।

गुड! अब तुम वास्तव में समझदार होते जा रहे हो। तुम्हारा कहना ठीक है। उस दल के व्यक्ति जरूर हमारी एक-एक हरकत पर नजर रख रहे हैं...

... वरना हमारे बम्बई पहुंचते ही या पहुंचने से पहले ही वे अजीतपाल का कत्ल न करते।
फिर अब तुम्हारा क्या करने का विचार है...

... हमारे यहां आने का उद्देश्य फिलहाल तो बेकार गया। और यही नहीं, अब हमारे लापता विमानों की खोजबीन करने के आगे के सारे रास्ते भी बंद हो गए हैं।
बंद रास्ते खुल भी सकते हैं रहीम। यदि हमें एक बार अजीतपाल के फ्लैट की छान-बीन करने का मौका मिल जाए...

...हो सकता है, वहां हमें कोई ऐसा सूत्र मिल जाए, जिससे विमानों के लापता होने पर प्रकाश पड़ सके या हमें अजीत-पाल और राही के कातिलों तक पहुंचने में मदद मिल सके।
हां, यह तो सम्भव है राम भइया! क्यों न हम इस मामले में पुलिस की मदद लें। अपना परिचय देने के बाद हमारे लिए यह काम बहुत आसान हो जाएगा।

राम-रहीम जब अपने होटल के द्वार पर टैक्सी से उतरे तो उन्हें यह भापते देर नहीं लगी थी कि वास्तव में उन पर नजर रखी जा रही थी और एक कार उनका पीछा करते हुए वहां तक पहुंची थी।

क्या ख्याल है भइया! क्या इस पीछा करने वाले व्यक्ति से इसी समय निपट लिया जाए! पीछा करने वाला वही है, जो अपनी कार के निकट खड़ा सिगरेट पी रहा है।

नहीं! अभी हमें कोई लफड़ा नहीं करना है। वरना अपने काम में हम स्वयं ही रुकावट पैदा कर लेंगे...

...आओ, अपने कमरे में चलते हैं, फिर अपना नया प्रोग्राम बनायेंगे।

अपने कमरे में पहुंचकर राम इंटरकॉम पर खाने का ऑर्डर देने लगा और रहीम खिड़की के पास खड़ा होकर बाहर का नजारा देखने लगा।
राम भइया! वह व्यक्ति अब भी वहां मौजूद है।
वह हमारी ही निगरानी पर नियुक्त है, लेकिन तुम वहां से हट जाओ। यदि उसे यह मालूम हो गया कि वह हमारी नजर में आ चुका है, तो हमारा सारा खेल बिगड़ जाएगा।

रहीम खिड़की से हट गया। तब तक राम भी खाने का ऑर्डर दे चुका था।
लेकिन राम भइया, यदि वह इसी तरह लगातार हम पर नजर रखता रहा, तो हम अजीतपाल के फ्लैट की तलाशी कैसे लेंगे।
वह होटल के सामने वाले गेट पर नजर रखे हुए है। हम रात को होटल के पिछले गेट से बाहर निकलेंगे।

ओह! मान गया राम भइया, तुम्हारा दिमाग बहुत तेज है।

कुछ देर बाद खाना आ गया और दोनों खाने में जुट गए।
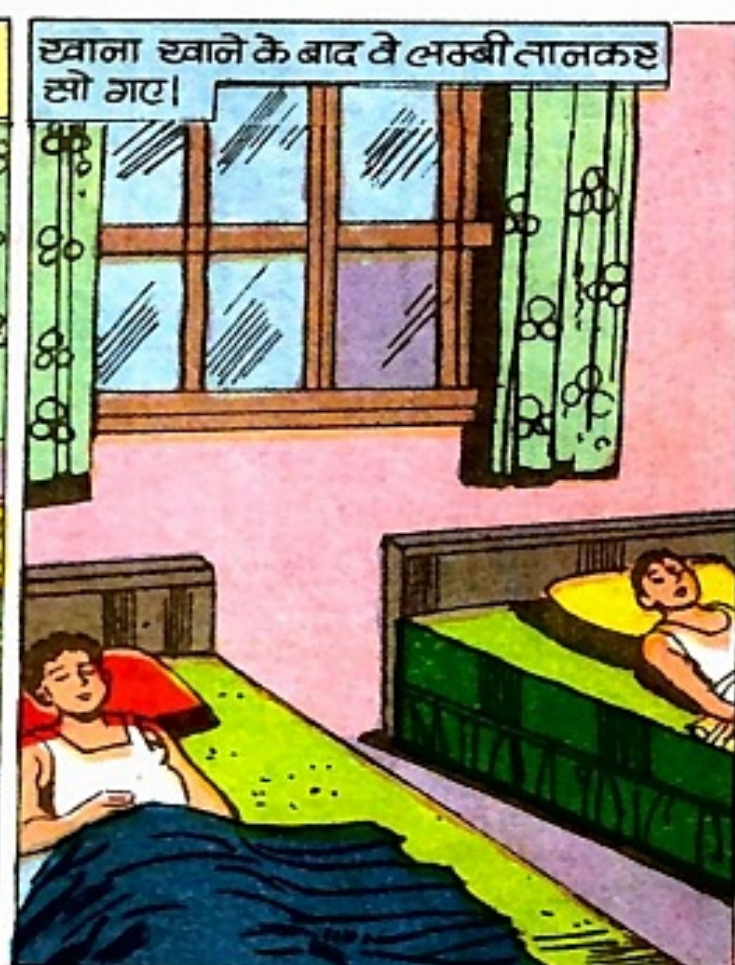
खाना खाने के बाद वे लम्बी तानकर सो गए।

शाम को पांच बजे वे उठे और तैयार होकर मार्केटिंग करने निकल पड़े। पीछा कर्ता साए की तरह उनके पीछे लगा था।
परन्तु राम-रहीम तो उसे चरका दे रहे थे।

एक-दो घंटे निरर्थक बाजार में घूमने के बाद वे वापस अपने होटल में लौट आए और खाना खाकर ऐसे ही गपशप करने लगे।

उन पर निगरानी रखने वाला खिड़की के रास्ते से अब भी बराबर उन पर नजर रखे हुए था।
रात के ग्यारह बज गए, लेकिन कम्बख्त अब तक जाग रहे हैं...

...मुझे बॉस को सारी रिपोर्ट देकर उनसे आज्ञा लेनी चाहिए।

हैलो-हैलो, ब्लैक ड्रेगन, नम्बर जीरो-जीरो फाइव कालिंग।

यस, ब्लैक ड्रेगन रिसीविंग, रिपोर्ट डबल जीरो।
बॉस! वे अभी भी जगे हुए हैं...।

फिर सारी रिपोर्ट देने के बाद—
बॉस! यदि आपकी आज्ञा हो तो उनके सोते ही उन्हें हमेशा-हमेशा के लिए सुला दूं। ताकि यह लफड़ा हमेशा के लिए खत्म हो जाये।
बकवास मत करो..

...तुम शायद नहीं जानते कि वे दोनों कितने खतरनाक और चालाक छोकरे हैं। यदि एक बार भी तुम्हारा पासा गलत फिंक गया तो शायद तुम्हें कभी जगाने का मौका नहीं मिलेगा...

...यही नहीं, बल्कि अब तक हमने जो खेल खेला है, वह भी सारा चौपट हो जायेगा..

डबल जीरो ने भी ट्रांसमीटर ऑफ करके उसे जेब में डाल लिया। तभी राम-रहीम के कमरे में अंधेरा छा गया।

- डबल जीरो क्या सचमुच राम-रहीम पर नजर रख सका?
- क्या राम-रहीम शिकारी अजीतपाल के घर की तलाशी ले पाने में सफल हो पाये?
- वह कौन-सा रहस्य था, जिसे अजीतपाल ने छिपा रखा था और जिसके लिये उसे अपनी जान गंवानी पड़ी?
- लापता विमानों का क्या रहस्य था? उनको कौन हाई जैक करता था? और क्यों करता था?
- डबल जीरो का बॉस कौन था और वास्तव में उनका अड्डा कहां था? क्या राम-रहीम, बॉस और उसके अड्डे तक पहुंच पाने में सफल हो सके?

इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए पढ़ें :—